



Neutral Citation No. - 2026:AHC:3637

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक विविध जमानत आवेदन संख्या - 31574 वर्ष 2025

दिलीप

...आवेदक

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

...प्रतिवादी

आवेदक के अधिवक्ता: संजीव कुमार त्रिवेदी

प्रतिवादी के अधिवक्ता: शासकीय अधिवक्ता

न्यायालय संख्या - 68

माननीय न्यायमूर्ति आशुतोष श्रीवास्तव

आवेदक के विद्वान अधिवक्ता श्री संजीव कुमार त्रिवेदी और राज्य के विद्वान ए.जी.ए. श्री अरिमर्दन यादव की बात सुनी गई और मामले के अभिलेखों का अवलोकन किया गया।

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 483 के तहत यह जमानत याचिका आवेदक

दिलीप की ओर से दायर की गई है, जिसमें उनसे मुकदमा अपराध संख्या 286/2025, धारा

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



8/20/29/60, मादक औषधि एवं मनोरोगी पदार्थ अधिनियम, 1985, पुलिस स्टेशन- साचेंडी, जिला- कानपुर नगर के अंतर्गत मामले में जमानत पर रिहा करने की प्रार्थना की गई है।

आवेदक के अधिवक्ता ने तर्क दिया है कि 75 किलोग्राम 450 ग्राम गांजा उस वाहन से बरामद होने का आरोप है जिसमें आवेदक और सह-आरोपी यात्रा कर रहे थे। वास्तव में ऐसी कोई बरामदगी नहीं हुई है। आगे यह भी कहा गया है कि चूंकि ऐसी बरामदगी किसी स्वतंत्र गवाह द्वारा समर्थित नहीं है, इसलिए अपराध में उसे झूठा फंसाए जाने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। यह भी तर्क दिया गया है कि आवेदक पूरी तरह से निर्दोष है और उसे अनावश्यक उत्पीड़न और पीड़ित करने के उद्देश्य से इस अपराध में झूठा फंसाया गया है। आवेदक के अधिवक्ता ने बताया कि समान परिस्थितियों वाले सह-आरोपी शैनी आलम को इस न्यायालय द्वारा 15.12.2025 को आपराधिक विविध जमानत आवेदन संख्या 32683/2025 में जमानत पर रिहा किया जा चुका है। आवेदक, जो 15.7.2025 से जेल में है और जिसका कोई आपराधिक इतिहास नहीं है, उसे जमानत पर रिहा किया जाना चाहिए। यदि आवेदक को जमानत पर रिहा कर दिया जाता है तो वह जमानत की स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करेगा।

इसके विपरीत, विद्वान ए.जी.ए. ने आवेदक की जमानत याचिका का विरोध करते हुए तर्क दिया है कि प्रतिबंधित सामग्री की आपूर्ति में शामिल होने के कारण, आवेदक की निर्दोषता का निर्णय मुकदमे से पहले के चरण में नहीं किया जा सकता है, इसलिए आवेदक किसी भी प्रकार की रियायत का पात्र नहीं है। यदि आवेदक को जमानत पर रिहा किया जाता है, तो वह फिर से इसी प्रकार की गतिविधि में लिप्त हो जाएगा।

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



मामले के तथ्यों, भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के व्यापक अधिकार, आरोपों की प्रकृति, उनके समर्थन में साक्ष्यों की प्रकृति, दोषसिद्धि के परिणामस्वरूप मिलने वाली सजा की गंभीरता, आरोपी-आवेदक का चरित्र, आरोपी से संबंधित विशिष्ट परिस्थितियाँ, मुकदमे में आरोपी की उपस्थिति सुनिश्चित करने की उचित संभावना, गवाहों के साथ छेड़छाड़ की उचित आशंका, जनहित/राज्य के व्यापक हित और अन्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, लेकिन मामले की खूबियों पर कोई राय व्यक्त किए बिना, मेरा मानना है कि यह जमानत देने के लिए उपयुक्त मामला है।

अतः, जमानत याचिका **स्वीकार** की जाती है।

उपरोक्त मामले में आरोपी **दिलीप** को जमानत पर रिहा किया जाए, बशर्ते वह व्यक्तिगत मुचलका और दो जमानती पेश करे, प्रत्येक की राशि संबंधित न्यायालय की संतुष्टि के अनुरूप हो। निम्नलिखित शर्तों के साथ:

1. आरोपी जांच या मुकदमे के दौरान गवाहों को डरा-धमकाकर या उन पर दबाव डालकर अभियोजन साक्ष्यों से छेड़छाड़ नहीं करेगा।
2. आरोपी बिना किसी स्थगन की मांग किए मुकदमे में पूरी ईमानदारी से सहयोग करेगा।
3. जमानत पर रिहा होने के बाद आरोपी किसी भी आपराधिक गतिविधि में शामिल नहीं होगा या कोई अपराध नहीं करेगा।

उपरोक्त किसी भी शर्त का उल्लंघन होने पर, यह जमानत रद्द करने का आधार होगा। आवेदक और जमानतदारों की पहचान, स्थिति और निवास प्रमाण को जमानत स्वीकार किए जाने से पहले संबंधित न्यायालय द्वारा सत्यापित किया जाएगा।

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



7, जनवरी, 2026

रवि प्रकाश.

(न्यायमूर्ति आशुतोष श्रीवास्तव)

अस्वीकरण:- अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।